Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on - **सिंधु सभ्यता के पतन के कारण।**

(for TDC Part 1 HISTORY HONOURS)

सिंधु सभ्यता के पतन के कारण।

सभ्यता का उत्थान और पतन इतिहास की एक धारा है जिस सभ्यता का उदय हुआ उसका कभी न कभी किसी न किसी बिन्दु पर अवश्य ही पराभव होता है और सिंधु सभ्यता के साथ भी ऐसा ही कुछ हुआ। इसी संदर्भ में विद्वानों एवं इतिहासकारों ने इसके पतन के अलग-अलग कारणों की व्याख्या की है।

मार्टीमर ह्वीलर, स्टुअर्ट पिगॉट, गार्डन चाइल्ड, जैसे विद्वानों ने सिंधु सभ्यता के पतन में विदेशी आक्रमणकारियों (आर्य) को उत्तरदायी ठहराया है। इस संदर्भ में मार्टीमर ह्वीलर का यह कथन कि “पारिस्थितिकीजन्य साक्ष्यों के आधार पर इन्द्र दोषी ठहरता है" आर्य आक्रमण के सिद्धांत को प्रतिपादित करता है। इस मत के पक्ष में साहित्यिक एवं पुरातात्विक साक्ष्य प्रस्तुत किए गए हैं। इस सन्दर्भ में दिये गये तर्को में मोहनजोदड़ो से कई मानव कंकालों की प्राप्ति प्रमुख हैं, जो व्यापक जनसंहार की प्रतीक है।ऋग्वेद में इन्द्र का पुरन्दर के रूप में वर्णन, उल्लेखनीय है, जिसे सभ्यता के किलों को नष्ट करने के लिए उत्तरदायी माना गया है किंतु

अन्य इतिहासकार इससे पूर्णतः सहमत नहीं है ।

रामशरण शर्मा के अनुसार प्राप्त कंकाल किसी एक निश्चित समय से सम्बन्धित नहीं है साथ ही हड़प्पा सभ्यता के पतन का अनुमानित समय18-17 शताब्दी B.C. के आसपास स्वीकार्य है, जबकि आर्यों का आगमन या वैदिक सभ्यता की स्थापना 1500 B.C. के आसपास मानी गई है। बीच के इस युग में कई ताम्रकालिक एवं परवर्ती सैंधव संस्कृतियों के अवशेष मिले हैं।

मार्शल, एस. आर. राव, अर्नेस्ट मैके ने नदियों में आयी बाढ़ जैसी प्राकृतिक घटना को सभ्यता के पतन का मुख्य कारण माना है।इस सन्दर्भ में मार्शल ने सिन्धु नदी की बाढ़ मोहनजोदड़ो के सन्दर्भ में, डॉ. एस. आर. राव ने लोथल एवं भगवत राव (भोगवा, साबरमती) नदियों के परिप्रेक्ष्य में तथा मैके ने चन्हुदड़ो को इसी रूप में पतनोन्मुख परिकल्पित किया है और उन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में बाढ़ से उत्पन्न विनाश सम्बन्धी साक्ष्य प्राप्त होने की सम्भावना स्वीकार की है।

आर. एल. रीज ने भी सिन्धु नदी की बाढ़ को इस सन्दर्भ में स्वीकार किया है, लेकिन महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि

इसके अतिरिक्त। अन्य विविध क्षेत्रों एवं स्थलों के पतन का इससे क्या सम्बन्ध है?

ओरेल स्टाइन, अमलानन्द घोष, डी. पी. अग्रवाल इस दृष्टि से जलवायु में परिवर्तन को पतन के लिए उत्तरदायी ठहराया है. सिन्धु और घघ्यर के क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन के कारण शुष्कता बढ़ी और जीवनयापन की परिस्थितियाँ प्रतिकूल हो गईं, परिणामस्वरूप' लोगों ने वहाँ से पलायन किया और सभ्यता क्रमशः खण्डहरों में परिवर्तित हो गई।

एम. आर. साहनी (प्रमुख भू-वैज्ञानिक) एवं लैम्ब्रिक ने हड़प्पा सभ्यता के पतन में जलप्लावन को एक महत्वपूर्ण कार्य माना है। जलप्लावन के परिणामस्वरूप उत्पन्न दलदल और कीचड़युक्त भूमि में वृद्धि को सभ्यता के पतन के कारण के रूप में विहित किया है जिससे न केवल यातायात बाधित हुआ बल्कि सामान्य जीवन-यापन भी असम्भव हो गया।

के. यू. आर. केनेडी ने इस सन्दर्भ में महामारी जैसे संक्रामक रोगों की सम्भावना स्वीकार की है, इससे एक साथ लोग मारे गये तथा रहने के स्थल खण्डहरों में बदल

गये।

गुरुद्वीप सिंह ने कालीबंगा व सिन्ध में भूमि की शुष्कता बढ़ना पतन का कारण माना है। इससे घग्घर - हाकड़ा नदी क्षेत्र सूखने लगा फलतः इस क्षेत्र की बस्तियों में एक प्राकृतिक आपदा की स्थिति उत्पन्न हो गई।

यद्यपि निश्चित और प्रामाणिक साक्ष्यों के अभाव में पतन के किसी निश्चित कारण को विहित करना दुष्कर है, लेकिन अधिक उपयुक्त सम्भावना यही है कि अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग कारक तत्वों की भूमिका रही। इन स्थलों का पतन आकस्मिक न होकर क्रमिक था। ऐसी स्थिति में जब तक कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मिल जाता सैंधव नगरों के पतन के संदर्भ में किसी एक मत को निर्णायक रूप से सत्य मानना अपने आप में निष्पक्ष दृष्टिकोण नहीं प्रतीत होता।

References: Internet & Competitive books.